

भगत नामदेव – सबद ४७
सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥
रागु भैरउ, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ११६५

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥
देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ १ ॥
नामा सुलताने बाधिला ॥
देखउ तेरा हरि बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥
बिसमिलि गरु देहु जीवाइ ॥
नातरु गरदनि मारउ ठाँइ ॥ २ ॥
बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥
बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥ ३ ॥
मेरा कीआ कछू न होइ ॥
करि है रामु होइ है सोइ ॥ ४ ॥
बादिसाहु चडिओ अहंकारि ॥
गज हसती दीनो चमकारि ॥ ५ ॥
रुदनु करै नामे की माइ ॥
छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥ ६ ॥
न हउ तेरा पूँगड़ा न तू मेरी माइ ॥
पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥ ७ ॥
करै गजिंदु सुँड की चोट ॥
नामा उबरै हरि की ओट ॥ ८ ॥
काजी मुलाँ करहि सलामु ॥
इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥ ९ ॥
बादिसाह बेनती सुनेहु ॥
नामे सर भरि सोना लेहु ॥ १० ॥

मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥
दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥ ११ ॥
पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥
नामा गावै गुन गोपाल ॥ १२ ॥
गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥
तउ नामा हरि करता रहै ॥ १३ ॥
सात घड़ी जब बीती सुणी ॥
अजहु न आइओ तृभवण धणी ॥ १४ ॥
पाखंतण बाज बजाइला ॥
गरुड़ चङ्ङे गोबिंद आइला ॥ १५ ॥
अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥
गरुड़ चङ्ङे आए गोपाल ॥ १६ ॥
कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥
कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥ १७ ॥
कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥
सभु कोई देखै पतीआइ ॥ १८ ॥
नामा प्रणवै सेल मसेल ॥
गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥ १९ ॥
दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥
ले बादिसाह के आगे धरी ॥ २० ॥
बादिसाहु महल महि जाइ ॥
अउघट की घट लागी आइ ॥ २१ ॥
काजी मुलाँ बिनती फुरमाइ ॥
बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥ २२ ॥
नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥
इहु किछु पतीआ मुझै दिखाइ ॥ २३ ॥

इस पतीआ का इहै परवानु ॥
साचि सीलि चालहु सुलितान ॥२४॥
नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥
मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥२५॥
जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥
त नामदेव का पतीआ जाइ ॥२६॥
नामे की कीरति रही संसारि ॥
भगत जनों ले उधरिआ पारि ॥२७॥
सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥
नामे नाराइन नाही भेदु ॥२८॥१॥१०॥

सार: अहं की मुखर और दृढ़ शक्ति तथा जन्मजात सहज समझ की सूक्ष्म शक्ति के बीच का संबंध हमारे आंतरिक जीवन को आकार देता है। अहं नियंत्रण और मान्यता चाहता है और अकसर अंतर्ज्ञान से मिलने वाले गहन सच को दबा देता है। जब अहं हावी होता है, तब हमारा नज़रिया सीमित हो जाता है और हम बचाव की मुद्रा में आ जाते हैं। इसके विपरीत, विनम्रता को स्वीकार करने से हम ऐसी गहन समझ पा सकते हैं जो अहं को नरम करती है और हमें वास्तविकता को समझने में मदद करती है। यह बदलाव आत्मविश्वास को आत्म-निश्चय में बदल देता है जिससे यह कमज़ोरी के बजाय शक्ति बन जाता है। जब हम खुले मन का विकास करते हैं तब हमारे निर्णय सत्यनिष्ठा पर आधारित होने लगते हैं और हमारी बुद्धि हमारे कार्यों का मार्गदर्शन करती है जिससे जीवन जीने के तरीक़े के रूप में नैतिकता को बढ़ावा मिलता है।

सुलतानु पूछै सुनु बे नामा ॥

सुलतान पूछता है, 'सुनो, ओ नामदेव।' यह अहं की उस मुखर और अधिकारपूर्ण शक्ति को दिखाता है जो विनम्र और सहज ज्ञान को चुनौती देती है।

देखउ राम तुम्हारे कामा ॥ १ ॥

मुझे अपनी सर्वव्यापी चेतना का प्रभाव दिखाओ। यह अहं की उस अतृप्त इच्छा को दिखाता है जो प्रमाण चाहती है और सार्वभौमिक ज्ञान को वास्तविक आंतरिक सत्य के बजाय केवल चमत्कारी लीला समझती है। (१)

नामा सुलताने बाधिला ॥

नामदेव को सुलतान ने रोक दिया। यह उस अवस्था का संकेत है जिसमें कठोर और संस्कारित मानसिकता के कारण आलोचनात्मक चिंतन स्वयं को बंधा हुआ अनुभव करता है।

देखउ तेरा हरि बीठुला ॥ १ ॥ रहाउ ॥

मुझे तुम्हारे सर्वव्यापी स्रोत की जाँच करने दो। यह दिखाता है कि कैसे सामाजिक और धार्मिक बंधन आत्म-चिंतन और आलोचनात्मक सोच को कमजोर करते हैं। (१)(विराम)

बिसमिलि गऊ देहु जीवाइ ॥

'कटी हुई गाय को पुनः जीवित कर दो।' यह प्रकृति के सार्वभौमिक नियमों को चुनौती देने की अहं की नासमझ माँग को उजागर करता है।

नातरु गरदनि मारउ ठाँइ ॥ २ ॥

'नहीं तो, मैं तुम्हारा सिर काट, तुम्हें तुरंत मार डालूँगा।' यह दिखाता है कि कैसे अहं सत्ता खोने का डर पैदा करता है जो आत्मा को अनैतिक काम करने की तरफ़ आकर्षित करता है। (२)

बादिसाह ऐसी किउ होइ ॥

नामदेव जवाब देते हैं, 'हे राजा, ऐसा कैसे हो सकता है?' यह विचारों की स्पष्टता को दर्शाता है, जो अहं को दूर करता है और प्राकृतिक व्यवस्था को स्वीकार करता है।

बिसमिलि कीआ न जीवै कोइ ॥३॥

जो मर चुका है, वह जीवित नहीं होता। यह बताता है कि जब जागृत अंतरात्मा बुराईयों का विनाश कर देती है तब वह दोबारा उत्पन्न नहीं होती। (३)

मेरा कीआ कछू न होइ ॥

मेरे करने से कुछ नहीं होता। यह अहं के दावों को छोड़कर विनम्रता से प्रकृति के नियमों के प्रति समर्पण करने का संकेत है और यह समझना कि व्यक्तिगत इच्छा की शक्ति सार्वभौमिक व्यवस्था के सामने सीमित है।

करि है रामु होइ है सोइ ॥४॥

सार्वभौमिक वास्तविकता जो तय करती है, वही होता है। यह सारी शक्ति उस ब्रह्मांडीय नियम को समर्पित करता है जो व्यक्तिगत इच्छा से अलग काम करती है और व्यापक कल्याण की ओर गतिशील है। (४)

बादिसाहु चड़िओ अहंकारि ॥

राजा अहंकार से क्रोधित हो गया। यह दर्शाता है कि जब किसी के अहं को चुनौती दी जाती है या उसकी अतृप्त इच्छाएं पूरी नहीं होतीं तब वह कैसे प्रतिक्रिया देता है।

गज हसती दीनो चमकारि ॥५॥

विशाल हाथी को आकर्षित किया गया। यह बताता है कि अहंs से प्रेरित डर की भारी शक्ति हमारे मन की शांति को कैसे डगमगा सकती है। (५)

रुदनु करै नामे की माइ ॥

नामदेव की माँ रोती है। यह डर से भरे, अनिश्चितता और अज्ञानता से प्रभावित मन को दर्शाता है।

छोडि रामु की न भजहि खुदाइ ॥६॥

'राम को छोड़कर, खुदाई को क्यों नहीं याद करते?' यह उस संदेह को दिखाता है जो हमारी पहचान को किसी भाषा, विश्वास, समूह या भूगोल से जोड़कर, हमारी एकत्व की समझ को सीमित करता है।
(६)

न हउ तेरा पूंगड़ा न तू मेरी माइ ॥

मैं तेरा बच्चा नहीं हूँ और तू मेरी माँ नहीं है। यह जोर देता है कि सच्चाई के रास्ते पर चलने के डर का, अज्ञानता और अहं से कोई लेना-देना नहीं है, इसमें उन मोह-माया के बंधनों को तोड़ना शामिल है जो सच्चाई को जानने में बाधा डालते हैं।

पिंडु पड़ै तउ हरि गुन गाइ ॥७॥

भले ही मेरा शरीर कमजोर पड़ जाए, मैं सर्वव्यापी ऊर्जा की एकता को अपने भीतर महसूस करूँगा। यह संकल्प एकता के साथ जुड़े रहने और हर परिस्थिति में उसे व्यक्त करने के दृढ़ निश्चय को दर्शाता है। (७)

करै गजिंदु सुँड की चोट ॥

हाथी अपनी सूँड से प्रहार करता है। यह दर्शाता है कि कैसे प्रबल अहं मन पर हावी हो सकता है और उसे विनाश के कगार पर ले जा सकता है।

नामा उबरै हरि की ओट ॥८॥

नामदेव कहते हैं कि सर्वव्यापी चेतना के सहारे से उन्हें आत्म-ज्ञान का अनुभव होता है। यह उस सुरक्षा को दर्शाता है जो आंतरिक जगत में तब मिलती है जब ध्यान ज्ञान में स्थित होता है। (८)

काजी मुलाँ करहि सलामु ॥

क्राज़ी-धार्मिक न्यायाधीश और मुल्ला-धर्मगुरु, सम्मान में सिर झुकाते हैं। यह वास्तविक सम्मान की अपेक्षा सत्ता के प्रति भय से उत्पन्न आज्ञाकारिता को दर्शाता है।

इनि हिंदू मेरा मलिआ मानु ॥९॥

भारतीय संस्कृति के इस व्यक्ति ने मेरे अहं को कम कर दिया है। यह श्रेष्ठता की उस भावना को दर्शाता है जो इस ग़लत धारणा पर आधारित है कि कोई एक जीवन-पद्धति दूसरों से बेहतर है। (९)

बादिसाह बेनती सुनेहु ॥

राजा से विनती सुनने का आग्रह किया जाता है। यह आक्रामकता को करुणा में बदलने के प्रयास का प्रतीक है।

नामे सर भरि सोना लेहु ॥१०॥

नामदेव के वज़न के बराबर सोना ले लो। यह भौतिक धन की मायावी शक्ति को छोड़ने और ज्ञान की स्थायी शक्ति को पाने की ओर इशारा करता है। (१०)

मालु लेउ तउ दोजकि परउ ॥

आपसे यह धन लेने पर मैं जीते-जी नर्क में गिर जाऊँगा। यह उस मानसिक पीड़ा और कष्ट को पहचानने का प्रतीक है जो सत्यनिष्ठा और ज्ञान का सौदा करके क्षणिक भौतिक लाभ प्राप्त करने से उत्पन्न होती है।

दीनु छोडि दुनीआ कउ भरउ ॥११॥

दुनिया की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए मैं अपना धर्म छोड़ दूँगा। यह उस भ्रांति की ओर संकेत करता है जिसमें धार्मिक रीति-रिवाजों को छोड़ना, मानवता के व्यापक कल्याण के लिए दूसरों के साथ सहयोग करने से अधिक चिंताजनक माना जाता है। (११)

पावहु बेड़ी हाथहु ताल ॥

पैरों में बेड़ियाँ होने पर भी वह तालियाँ बजाता है। यह प्रदर्शन अपमान या शारीरिक कैद से न टूटने वाले भाव को दिखाता है जो उस आंतरिक आज़ादी का विजयी जश्न मना रही है जिसे दबाया नहीं जा सकता।

नामा गावै गुन गोपाल ॥ १२ ॥

वह सार्वभौमिक स्रोत के गुणों का गान करते हैं। यह उस एकत्व के साथ निरंतर जुड़े रहने का प्रतीक है, जो बाहरी परिस्थितियों से परे है। (१२)

गंग जमुन जउ उलटी बहै ॥

चाहे गंगा-यमुना नदियाँ उल्टी ही क्यों न बहती हों। यह साधक के दृढ़ संकल्प का प्रतीक है, परिस्थितियाँ बदल सकती हैं लेकिन दृढ़ संकल्प बना रहता है।

तउ नामा हरि करता रहै ॥ १३ ॥

फिर भी, नामदेव कहते हैं कि वह सर्वव्यापी एकता में लीन रहेंगे। यह उस अटूट ध्यान की ओर संकेत करता है जो प्रलोभनों के बावजूद सार्वभौमिक व्यवस्था में स्थिर रहता है। प्रलोभन की परवाह किए बिना, ब्रह्मांडीय क़ानून में अटूट ध्यान देने की ओर इशारा करता है। (१३)

सात घड़ी जब बीती सुणी ॥

सुनते-सुनते बहुत समय बीत गया। इससे समय की बर्बादी का पता चलता है जिसमें एकता की बात तो की जाती है लेकिन उसे मूर्त रूप नहीं दिया जाता।

अजहु न आइओ तृभवण धणी ॥ १४ ॥

फिर भी सर्वव्यापी जागरूकता प्राप्त नहीं हुई है। यह उस निराशा को दर्शाता है जिसमें व्यक्ति धार्मिक प्रक्रियाओं और सामाजिक दायित्वों में समय लगाने के बावजूद, अस्तित्व के मूल सार को समझ नहीं पाता। (१४)

पाखंतण बाज बजाइला ॥

पक्षी के फड़फड़ाते पंखों की आवाज़ सुनाई दी। यह आत्म-चिंतन के उन सूक्ष्म क्षणों की ओर इशारा करता है जो बदलाव की ओर प्रेरित करते हैं।

गरुड़ चढ़े गोबिंद आइला ॥ १५॥

सार्वभौमिक पालनकर्ता गरुड़ पर सवार होकर आया। यह पौराणिक संदर्भ उस आंतरिक स्पष्टता का प्रतीक है जो बुद्धि और विवेक के आधार पर प्रकट होती है और चेतना को ऊँचा उठाती है। (१५)

अपने भगत परि की प्रतिपाल ॥

भक्ति के रूप में आत्म-चिंतन, पालन-पोषण और विकास में सहायक होता है। इसका अर्थ है कि आत्म-कृपा जो चिंतन से उत्पन्न होती है, आंतरिक सहारे के रूप में कार्य करती है।

गरुड़ चढ़े आए गोपाल ॥ १६॥

सर्वव्यापी पालनहार, गरुड़ पक्षी पर सवार होकर आए। यह चेतना की प्राप्ति का संकेत है, जो अंतरात्मा को ऊँचा उठाती है और स्थिरता प्रदान करती है। (१६)

कहहि त धरणि इकोडी करउ ॥

यदि आप कहें तो मैं पृथ्वी को एक ओर झुका दूँ। यह हमारी सोच को बदलने में जागृत अंतरात्मा के प्रभाव को दिखाता है।

कहहि त ले करि ऊपरि धरउ ॥ १७॥

अगर आप कहें तो मैं उसे उठाकर उलट दूँ। यह इस बात का प्रतीक है कि जब अस्तित्व के मूल तत्व को समझा जाता है तब वास्तविक शक्ति की समझ बदल सकती है। (१७)

कहहि त मुई गऊ देउ जीआइ ॥

अगर आप कहें तो इस मरी हुई गाय को फिर से जीवित कर दूँ। इसका अर्थ है कि अहं से पैदा हुई नकारात्मक भावनाएँ जो अपरिवर्तनीय प्रतीत होती हैं, आत्म-चिंतन के ज़रिए सकारात्मक गुणों में बदली जा सकती हैं।

सभु कोई देखै पतीआइ ॥ १८ ॥

जो कोई इसे देखेगा, वह आश्चर्य हो जाएगा। यह संदेह को दूर करने के लिए ज़रूरी सार्वभौमिक सच्चाई की पुष्टि को दर्शाता है। (१८)

नामा प्रणवै सेल मसेल ॥

नामदेव विनम्रता से कहते हैं कि गाय के पैर आपस में बंधे हुए हैं। यह ऐसी अंतरात्मा को दर्शाता है जो कट्टर और रूढ़ मानसिकता से मजबूती से बँधा हुआ है।

गऊ दुहाई बछरा मेलि ॥ १९ ॥

गाय अपने बछड़े से मिलने के लिए विलाप कर रही है। यह एकत्व की उस चाहत का प्रतीक है जो हमें उन सार्वभौमिक बंधनों से फिर से जोड़ती है जो हमारे सांझे अस्तित्व को परिभाषित करते हैं। (१९)

दूधहि दुहि जब मटुकी भरी ॥

जब दूध दुहा गया और मटकी भर गई। यह ज्ञान को एकत्र करने की उस प्रक्रिया का संकेत है जिसका उद्देश्य मुख्यतः अहं से ऊपर उठना है।

ले बादिसाह के आगे धरी ॥ २० ॥

उसे ले जाकर राजा के सामने रखा गया। यह दर्शाता है कि सच्ची समझ को बढ़ावा देने के इरादे से, अहं से भरी सोच के सामने ज्ञान पेश किया जा रहा है। (२०)

बादिसाहु महल महि जाइ ॥

राजा अपने महल में लौट गया। यह उस स्थिति को दर्शाता है जब अंतरात्मा मूल्यवान् बातों पर विचार करने और उन्हें अपनाने के लिए अहं से पीछे हटती है।

अउघट की घट लागी आइ ॥२१॥

गहरी और बेचैन करने वाली अनुभूति उत्पन्न हुई। यह आंतरिक संकट का प्रतीक है, वह उथल-पुथल जो अंतरात्मा तब महसूस करती है जब उसे अहं से भरी सोच के कारण हुई अज्ञानता का एहसास होता है। (२१)

काजी मुलाँ बिनती फुरमाइ ॥

क्राज़ी-धार्मिक न्यायाधीश और मुल्ला-धर्मगुरु ने याचिका और आदेश प्रस्तुत किया। यह उस मानसिकता को दर्शाता है जो सच्ची सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए अपनी पुरानी मान्यताओं से आगे बढ़ रही है।

बखसी हिंदू मै तेरी गाइ ॥२२॥

हे लोगों, मैंने तुम्हारी गाय को भारतीय क्षेत्र की संस्कृति से मुक्त कर दिया है। यह ऐसी जागृत चेतना की ओर इशारा करता है जो आध्यात्मिक स्वतंत्रता पाने और एकत्व को अपनाने के लिए अपनी अज्ञानता को छोड़ देती है। (२२)

नामा कहै सुनहु बादिसाह ॥

नामदेव कहते हैं, 'हे राजा, सुनो।' यह अज्ञानी मन को ज्ञान देने वाली समझ को दर्शाता है।

इहु किछु पतीआ मुझे दिखाइ ॥२३॥

यह सभी बातें मुझे समझ के माध्यम से स्पष्ट दिखाई देती हैं। यह केवल सुनी-सुनाई बात या किसी प्राधिकारी के कथन को स्वीकार करने के बजाय सत्य का प्रत्यक्ष अनुभव और परीक्षण करने की ओर संकेत करता है। (२३)

इस पतीआ का इहै परवानु ॥

इन पहलुओं का प्रमाण केवल गुणों को अपनाने में ही निहित है। यह दर्शाता है कि गहरी समझ नैतिकता पर आधारित होती है, न कि सतही ज्ञान पर।

साचि सीलि चालहु सुलितान ॥२४॥

हे सुल्तान, सच्चाई और विनम्रता के मार्ग पर चलो। यह सार्वभौमिक मूल्यों के अनुरूप सार्थक जीवन जीने का सुझाव देता है। (२४)

नामदेउ सभ रहिआ समाइ ॥

नामदेव कहते हैं कि वह उसी चेतना का हिस्सा हैं जो सबमें व्याप्त है। यह अद्वैत की अनुभूति को दर्शाता है, जहाँ अलग, स्वयं का अस्तित्व पूरी तरह मिट जाता है।

मिलि हिंदू सभ नामे पहि जाहि ॥२५॥

भारतीय क्षेत्र के लोग नामदेव के पास जाते हैं। यह दिखाता है कि ईमानदार लोगों को अक्सर असुरक्षित भावना के लोग चुनौती देते हैं और डटे रहने के लिए उन्हें आंतरिक स्पष्टता की ज़रूरत होती है। (२५)

जउ अब की बार न जीवै गाइ ॥

मान लीजिए कि इस बार गाय जीवित नहीं होती। यह उस मन को दर्शाता है जो अभी भी अनिश्चितता में फंसा है और सच्चाई के आश्वासन की चाह रखता है।

त नामदेव का पतीआ जाइ ॥२६॥

तब नामदेव की प्रतिष्ठा चली जाएगी। तब नामदेव का प्रमाण खो जाएगा। यह ऐसी कमज़ोर मानसिकता की ओर इशारा करता है जो अभी भी नतीजों और सामाजिक प्रतिष्ठा से बंधी हुई है। (२६)

नामे की कीरति रही संसारि ॥

नामदेव की नेक प्रतिष्ठा का दुनिया पर प्रभाव बना रहा। यह सदाचारी और धर्मपूर्ण जीवन की उस कालजयी विरासत की ओर इशारा करता है जो प्रेरणादायक है।

भगत जनों ले उधरिआ पारि ॥२७॥

समर्पित लोगों का उत्थान होता है और वह आगे बढ़ जाते हैं। यह बदलाव कठोर रूढ़िवादी सोच से हटकर ऐसी सोच की ओर बढ़ने को दिखाता है जो विकास को बढ़ावा देती है। (२७)

सगल कलेस निंदक भइआ खेदु ॥

सारी कलह और मतभेदों के कारण निंदा करने वालों को पछतावा हुआ। यह आत्म-चिंतन को दर्शाता है जो नकारात्मकता को दूर करता है और दूसरों को परखने या बुरा-भला कहने की आदत को शांत करता है।

नामे नाराइन नाही भेदु ॥२८॥१॥१०॥

नामदेव और सर्वव्यापी शक्ति के बीच कोई अंतर नहीं है। यह घोषणा पूर्ण एकता की पुष्टि करती है, वह परम सत्य, साधक और स्रोत एक ही हैं और हमेशा से एक ही रहे हैं। (२८)(१)(१०)

तत्त्व: भगत नामदेव जोर देते हैं कि नैतिक और सदाचारी का स्थायी प्रभाव इस क्षमता में निहित है कि वह मानवता को कठोर मान्यताओं से ऊपर उठाकर गहन समझ की ओर ले जा सके। उनकी मिसाल विनम्रता, विवेक और आत्म-विकास को बढ़ावा देती है, और दिखाती है कि बदलाव तब आता है जब सिद्धांतों को अहं से अधिक महत्त्व दी जाती है और समझदारी विचारधारा पर जीत हासिल करती है। ऐसे जीवन अहं से बनी रूढ़ियों और कट्टरताओं को चुनौती देते हैं और समानता, खुलेपन और सच्चाई पर आधारित जीवन के असली सार को उजागर करते हैं। मूल रूप से, यह दृष्टिकोण, सृष्टि के पूर्ण एकत्व की पुष्टि करता है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com